सोलहवां जन्मदिन

खुशीयों का संदेश आया,
कुलदिपक ने सबको हर्षाया।
अहलादित मन मे भाव आया,
दादी ने राजाबावु कहके बुलाया।।

हर अदा पे उसने मुस्काया,
अपना मुँह चलाकरा,
हमें कुछ समझाया।
मेरे साथ बोलना सिखा,
हाथ बढ़ाकर चलना सिखा।।

अक्षर ज्ञान बना पहचान,
बिकाश बावु का बढ़ने लगा, स्कुली ज्ञान।
खेल कुद मे बिते दिन,
दोस्तों से सिखने लगे गुण।।

मन मे तैरते भाव,
तन को कहां देते पराव।
बच्चों से बढ़ाये लगाव,....→..2

1..←..अमृत बचन का करे, उसमें ठहराव।
बचपन के दिन बित गये
सोलहवे जन्मदिन में पहुँच गये।
नव जिवन का संचार हुआ,
नई सुबह का आगाज हुआ।

जिम्मेदारी को समझना,
सपनो को जगाना।
लक्ष्य कि दिशा में, खुद को बनाना।
अभी बांकी है, ऐ सब आजमाना।।
दिन और दिशा जो तय हो।
नया सुरज उधर ही उदय हो।।
बिश्वास और बिकाश होते है साथ।
जब मन मे हो आश
ना रहे कभी पुर्ण अवकाश।।
सोलह के गेट से करो प्रण।
नही रुकेंगे हमारे कदम।
जबतक हम जित नहीं लेगे रण।।
लेखक एवं प्रेषकः- अमर नाथ साहु